ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, कृषि मौसम विभाग
जलवायु परिवर्तन पर उच्च अध्ययन केन्द्र
डा0 राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय
पूसा,समस्तीपुर (बिहार)–848125

बुलेटिन संख्या–०७
दिनांक- मंगलवार, २५ जनवरी, २०२२

विगत मौसम पूर्वानुमान अवधि का आकलन

मौसमीय वेधशाला पूसा के आकलन के अनुसार पिछले तीन दिनों का औसत अधिकतम एवं न्यूनतम तापमान क्रमशः 21.0 एवं 13.4 डिग्री सेल्सियस रहा। औसत सापेक्ष आर्द्रता 92 प्रतिशत सुबह में एवं दोपहर में 69 प्रतिशत, हवा की औसत गति 2.1 कि0मी0 प्रति घंटा एवं दैनिक वाष्पण 0.9 मि0मी0 तथा सूर्य प्रकाश अवधि औसतन 1.7 घन्टा प्रति दिन रिकार्ड किया गया तथा 5 से0मी0 की गहराई पर भूमि का औसत तापमान सुबह में 15.0 एवं दोपहर में 21.5 डिग्री सेल्सियस रिकार्ड किया गया। इस अवधि में मौसम शुष्क रहा।

मध्यावधि मौसम पूर्वानुमान
(26–30 जनवरी, 2022)

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, डा0आर0पी0सी0ए0यू0, पूसा, समस्तीपुर एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से जारी 26–30 जनवरी, 2022 तक के मौसम पूर्वानुमान के अनुसारः–

- उत्तर बिहार में अगले १२–२४ घंटों के दौरान आसमान में हल्के बादल छायें रह सकते है जिसके प्रभाव से अगले 12 से 24 घंटों में तराई जिलों में कहीं–कहीं बुंदा–बुंदी हो सकती है। उसके बाद की अवधि में मौसम शुष्क रहने की सम्भावना है।
- अधिकतम तापमान 18 से 22 डिग्री सेल्सियस एवं न्यूनतम तापमान में 3–5 डिग्री सेल्सियस गिरावट के साथ ७ से १० डिग्री सेल्सियस के बीच रहने का अनुमान है। पछिया हवा चलने के कारण ठंढ़ में वृद्धि हो सकती है।
- पूर्वानुमानित अवधि में औसतन 7 से 15 कि0मी0 प्रति घंटा की रफ्तार से पुरवा हवा चलने की संभावना है।
- हवा औसतन 7 से 10 कि0मी0 प्रति घंटा की रफ्तार से पछिया हवा चलने की संभावना है। रात्री एवं सुबह में हल्के से मध्यम कुहासे छा सकते हैं।
- सापेक्ष आर्द्रता सुबह में 70 से 80 प्रतिशत तथा दोपहर में 40 से 50 प्रतिशत रहने की संभावना है।

• समसामयिक सुझाव

- अगले १२–२४ घंटों में हल्की वर्षा की संभावना को देखते हुए किसान भाई कृषि कार्यों में सर्तकता बरतें। खड़ी फसलों में इस समय सिंचाई स्थगित रखें। हल्दी एवं ओल की तैयार फसलों की खुदाई सावधानीपूर्वक करें।
- गरमा मौसम की अगात सब्जियों जैसे–भिन्डी, कद्दू, कदिमा, करेला, खीरा एवं नेनुआँ की बुआई के लिए खेत की तैयारी करें। सब्जियों की स्वस्थ एवं गुणवत्तापूर्ण उत्पादन के लिए सड़ी–गली गोबर खाद का प्रबंध करें। १५०–२०० क्विंटल प्रति हेक्टेयर की दर से गोबर खाद की मात्रा पुरे खेत में अच्छी प्रकार विखेरकर मिला दें। यह खाद भुमि की जलधारण क्षमता एवं पोषक तत्वों की मात्रा बढ़ाती है। कजरा (कटुआ) पिल्लू से होने वाले नुकसान से बचाव हेतु खेत की जुताई में क्लोरपायरीफॉस २० ई०सी० दवा का २ लीटर प्रति एकड़ की दर से २०–३० किलो बालू में मिलाकर व्यवहार करें। इस कीट के पिल्लू रात्री के समय निकलकर इन सब्जियों की छोटे–छोटे उग रहे पौधो पर चढ़कर पत्तियों तथा कोमल शाखाओं को काटकर खाती है एवं जमीन पर गिरा देती हैं जिससे पूरा पौधा ही सूख जाता है।
- आलू की अगात प्रभेद की तैयार फसलों की खुदाई कर लें। बीज वाली फसल की ऊपरी लत्ती की कटाई कर लें तथा खुदाई के १५ दिनों पूर्व सिंचाई बन्द कर दें। पिछात आलू की फसल में कटवर्म या कजरा पिल्लू की निगरानी करें। आलू की फसल में शुरुआती अवस्था से कंद बनने की अवस्था तक यह कीट फसल को नुकसान पहुँचाती है। उपचार हेतु क्लोरपायरीफॉस २० ई०सी० दवा का २.५ से ३ मि०ली० प्रति लीटर पानी की दर से घोल बनाकर छिड़काव मौसम साफ रहने पर करें।
- पिछात बोयी गई गेहूँ की फसल में खर–पतवार नियंत्रण के कार्य को प्राथमिकता दें। फसल में जिंक की कमी के लक्षण (गेहूँ के पौधों का रंग हल्का पीला हो जाना) दिखाई दें रहें हो तो २.५ किलोग्राम जिंक सल्फेट, १.२५ किलोग्राम बुझा हुआ चुना एवं १२.५ किलोग्राम युरिया को ५०० लिटर पानी में घोलकर प्रति हेक्टेयर की दर से १५ दिन के अन्तराल पर दो बार छिड़काव मौसम साफ रहने पर करें।
- विलम्ब से बोई गयी दलहनी फसल में २ प्रतिशत यूरिया के घोल का छिड़काव एक सप्ताह के अन्तराल पर दो बार करें। अरहर में फली छेदक कीट की नियमित रुप से निगरानी करते रहें।
- बसन्तकालीन ईख, शकरकन्द, गरमा सब्जी की बुआई के लिए खेत की तैयारी करें। अक्टुवर–नवम्बर महीनों मे रोपी गई ईख की फसल में हल्की सिंचाई करे। जो किसान भाई ईख लगाना चाहते हैं, खेत की तैयारी कर बुआई शुरु कर सकते है।
- मक्का की फसल जो ५०–६० दिनों की अवस्था में है, उसमें ४० किलोग्राम नेत्रजन प्रति हेक्टेयर की दर से उपरिवेशन कर मिट्टी चढ़ा दें। आलू–मक्का अंतवर्ती खेती से तैयार आलू की निकाई–गुराई करें तथा ४० किलोग्राम प्रति हेक्टेयर नेत्रजन का उपरिवेशन करे।
- सरसों की फसल में लाही कीड़ों का आक्रमण हो सकता है । बचाव के लिए डाईमेथोएट ३० ई०सी० दवा का १.० मि०ली० प्रति लीटर पानी की दर से घोल कर छिड़काव करें । विलम्ब से बोई गयी दलहनी फसल में २ प्रतिशत यूरिया के घोल का छिड़काव एक सप्ताह के अन्तराल पर दो बार करें।
- पिछात बोयी गई गेहूँ की फसल में खर–पतवार नियंत्रण के कार्य को प्राथमिकता दें। फसल में जिंक की कमी के लक्षण (गेहूँ के पौधों का रंग हल्का पीला हो जाना) दिखाई दें रहें हो तो २.५ किलोग्राम जिंक सल्फेट, १.२५ किलोग्राम बुझा हुआ चुना एवं १२.५ किलोग्राम युरिया को ५०० लिटर पानी में घोलकर प्रति हेक्टेयर की दर से १५ दिन के अन्तराल पर दो बार छिड़काव मौसम साफ रहने पर करें।

आज का अधिकतम तापमानः २१.७ डिग्री सेल्सियस, सामान्य से १.७ डिग्री सेल्सियस कम	आज का न्यूनतम तापमानः १३.० डिग्री सेल्सियस, सामान्य से ५.० डिग्री सेल्सियस अधिक

(डॉ0 गुलाब सिंह)
तकनीकी पदाधिकारी

(डॉ0 ए. सत्तार)
नोडल पदाधिकारी